"वर्तमान परिपेक्ष में नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र की उपयोगिता एंव संभावना"

"Vartaman Paripeksh me Natyashastra me Varnit Taalshastra Ki Upayogita Avam Sambhavana"

Summary

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

TABLA

BY

AKASHMAN SUBHASH CHANDER

UNDER THE GUIDENCE

OF

Prof. Dr. GAURANG BHAVSAR

DEPARTMENT OF TABLA
FACULTY OF PERFORMING ARTS
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
VADODARA-390001

2016-2020

Registration Date: 09/05/2016

Registration No.: FOPA/51

सारांश

नाटक को आधार मानकर ही नाट्यशास्त्र की रचना की गई है, नाटक के द्वारा ही संगीत में समस्त विधाओं का संकलन संभव है। नाट्य में सभी रंग एक साथ देखने को मिलते हैं, इसी कारण इसे रंग भी कहा जाता है और इसके मंच प्रस्तुति होने को रंगमंचन कहा जाता है। नाट्यशास्त्र को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है उसका मुख्य कारण शोधार्थी को यह प्रतीत होता है कि जीवन में सभी तत्वों का समावेश चार वेदों में निहित है जो मानव जीवन में अनुशासन, जीवन शैली, सभ्यता संस्कृति का आधार है और इन चारों वेदों के आधार पर तथा चारों वेदों के संकलन द्वारा इस वसुंधरा पर प्रस्तुत हो रहे नाटक का मंचन कुशलतापूर्वक हो सके। यदि देखा जाए तो नाट्यशास्त्र मानव जीवन के प्रत्येक व्यावहारिक क्रियाकलापों का ही वर्णन है। जिस प्रकार नाट्यशास्त्र को आरंभ से देखने पर ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम नाटक की प्रस्तुति हेतु स्थान का चुनाव होता है फिर आधारशिला स्थापित होती है, वैसे ही वर्तमान समय में भी एक गृह निर्माण के नियम हैं जो नाट्यशास्त्र में प्रेक्षा ग्रह के नियमों में वर्णित किए गए हैं। विवाह आदि में मंडप स्थापना होती है देव, पितर सभी को स्थान प्रदान करते हुए पूजा की जाती है, यह वर्णन नाट्यशास्त्र के तृतीय अध्याय अर्थात रंग देवताओं की पूजा में प्राप्त होता है। व्यावहारिक रूप से यदि शोधार्थी अपने जीवन में इसका आधार देखे तो ज्ञात होता है कि यह सभी वर्तमान में भी मंडप स्थापना के समय दिखाई देते हैं जैसे शोधार्थी ने अपने ही परिवार के विवाह समारोह में नाट्यशास्त्र आधारित मंडप स्थापना को देखा है। यह पूर्ण व्यवहारिक होने के साथ–साथ नाअ्य में भी आज प्रयोग किया जाता है।

इसके पश्चात पूर्वरंग विधान के अंतर्गत रंगमंच पर होने वाले नाट्य मंचन के पहले किए जाने वाले कार्यों का वर्णन है जो आज भी किसी नाट्य या अनुष्ठान को पूर्ण करने के पूर्व के कार्य होते हैं। इसके बाद भरत मुनि द्वारा नाट्यशास्त्र में रस का वर्णन किया है जो मानव जीवन के प्रत्येक क्षण में बदलते हुए रसों का वर्णन प्रस्तुत किया है। मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षण में किसी न किसी रस को महसूस करता है जैसे इस शोध कार्य को करते समय नाट्यशास्त्र के जीवन्त को महसूस करा है शोधार्थी द्वारा कई बार श्रंगार, हास, अद्भुत जैसे रसों की अनुभूति की गई है। रस शास्त्र के अंतर्गत भरत मुनि द्वारा स्थाई भाव उनके संचारी

भावों के देवता रंग आदि को वर्णित किया गया है। यदि इसे आज के संदर्भ में देखें तो ज्ञात होता है कि रस के साथ इन सभी को मनुष्य में महसूस करता है और एक सफल नाटक में इसकी महान भूमिका है क्योंकि नाट्य तभी सफल है, जब श्रोता के चित्त को स्पर्श कर सके। जहाँ श्रोता को हास्य नाट्य के मंचनं में हास्य रस की अनुभूति ना हो तो वह नाटक जीवंत नहीं रहेगा। सफलता हेतु अनिवार्य है कि करुण रस के अंतर्गत शोक नामक स्थाई भाव मन तथा मस्तिष्क पर प्रभाव डाले और वह श्रोता उसे महसूस करें। इसी भाव को भरत मुनि ने भावों के रूप में भी वर्णित किया है। इसके बाद के अध्यायों में नाट्यशास्त्र के अंतर्गत शरीर द्वारा प्रस्तुत होने वाले भावों का वर्णन किया है।

जिसमें प्रत्येक अंग किस प्रकार अलग–अलग नाटक के भावों को प्रदर्शित करता है जैसे आज भी मंच पर पात्र को क्रोधित दिखाना होता है तो उसकी आंखें लाल, भृकुटी चढ़ी हुई और जोर से चलना आदि व्यवहार से उसके भावों को प्रकट किया जाता है। इसे आंगिक अभिनय में भरत मुनि द्वारा इन सभी मुद्राओं, जातियों वर्णो, देव सभी का वर्णन करते हुए हाथों की मुद्रा, पाद मुद्रा उनके चलने की विधि, खड़े होने की मुद्रा, उनकी गति सभी का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात नाट्यशास्त्र में रंगमंच की कक्ष्या में कौन किस स्थान को ग्रहण करेगा इसका वर्णन किया गया है। यदि आज के संदर्भ में देखें तो तकनीक ने सभी जगह अपने पांव पसार लिए हैं और यह तकनीक मंच पर भी देखने को मिलती है नियम वही है परंतु जो तकनीक के साथ रंगमंच को और जीवंत बनाते हैं। कक्ष्या में सभी पात्रों के स्थान निर्धारित होते है, ताकि पात्र जिस भूमिका में है, उस तरह के गान के साथ, उस तरह की रंग रोशनी डाली जा सके। देव भूमिका निभा रहे पात्र पर हल्कि तथा दानव, दैत्य, राक्षस पर लाल इत्यादि रगं का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार तकनीक का प्रयोग और अधिक आज नाट्यशास्त्र के करीब पहुंचा रहा है। इसी प्रकार वाचन और संवाद भी नाट्य को जीवंत बनाने का साधन है। नाट्यशास्त्र के काल में भाषा तथा उसके संवाद संस्कृत तथा प्राकृत भाषा में प्रस्तुत किए जाते थे क्योंकि वह उस समय की एक शुद्ध और विकसित भाषा के रूप में विराजमान थी। जिसमें स्वर व्यंजन, छंद तथा वर्ण सभी का उचित मिश्रण था। आज भी उसी प्रकार कुछ नाटक संस्कृत भाषा में प्रस्तुत होते हैं, परंतु वर्तमान में नाटक अपने लोक व्यवहार में प्रयोग किए जाने वाली भाषा में भी देखने को मिलते हैं। जिसमें उनके शास्त्र को आधार मानते हुए, शब्दों का चयन पात्र

के अनुकूल होता है। यदि हिंदी भाषा को देखें तो उसमें अलंकार क्रिया, विशेषण सभी को ध्यान में रखते हुए संवादों की रचना होती है। भाषा भी नाटक का महत्वपूर्ण अंग है जिसके माध्यम से श्रोता के ह्रदय तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है। पूर्व में भाषा का तत्सम रूप प्रयोग होता था और आज यह तद्भव रूप में प्रयोग होते हैं। इसी प्रकार सभी पात्रों को संबोधित करने व उसमें काकू प्रयोग का भी वर्णन किया गया है। जैसे कि पहले भी कहा गया है कि नाट्यशास्त्र मानव जीवन का चल रहे जीवंत नाटक का ही रूप है।

उसी क्रम में यदि देखें तो लोक व्यवहारिक भाषा में लोग अपने से बड़ों को किसी ना किसी नाम, पद, सम्मान आदि से संबोधित करते हैं और उसी संबोधन के फलस्वरुप काकू का निर्धारण करते हैं। जैसे शोधार्थी अपने गुरु के समक्ष बात करते समय आदर सम्मान से सर या गुरु कहकर संबोधित करता है और उसका काकू धीमे स्वर में होता है, जब अपने मित्र के साथ होता है तो उसके संबोधन तथा काकू में एक अलहड़ तथा मस्ती होती है। इसी का वर्णन नाट्यशास्त्र जो कि कई सदियों पूर्व रचित है, उसमें प्राप्त होता है। जैसे भरत मुनि भविष्य के दृष्टा थे। नाट्यशास्त्र में भी यह सभी पक्ष दिखाई देते हैं। इसके पश्चात नाटक के दस आवश्यक तत्व भरत मुनि द्वारा कहे गए हैं जैसे नाटक का आधार क्या हो? कितने प्रकरण हो? संवाद क्या हो? आदि। कथावस्तु को नाटक का प्राण कहा गया है, क्योंकि कथावस्तु ही इस बात का निर्धारण करती है कि श्रोताओं को पसंद आना है या नहीं और आज नाटक की कथावस्तु के आधार पर होता है जिनका सीधा संबंध या प्रभाव समाज से होता है।

अभिनय में पात्र द्वारा ग्रहण किए जाने वाले वस्त्रों, मुकुट, आभूषणों इत्यादि का भी अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि पात्र को देखकर यह ज्ञान हो जाएगी वह देव है, राक्षस है लालची है या सात्विक भाव रखने वाला व्यक्ति है इत्यादि का पात्र के द्वारा धारण किए गए वस्तुओं से होता है। नाट्यशास्त्र में मानव जीवन की प्रत्येक पहलू का दर्शन होता है। मनुष्य सभी दैनिक कार्यों में जैसें स्वयं की शुद्धता का भी कार्य करता है, उसी प्रकार नाट्यशास्त्र में स्नान, व्यायाम आदि को भी वर्णित किया गया है, जिससे शरीर सुंदर व सुडौल होता है इसी प्रकार नाट्यशास्त्र में वर्णित चरित्र संबंधी अध्यायों का अध्ययन किया जाए तो नाट्यशास्त्र के आधार पर मनुष्य सामने वाले के हाव–भाव द्वारा उसके चरित्र को समझ सकता है नाट्यशास्त्र में प्रत्येक व्यक्ति के हाव भावों के आधार पर सभी स्वभाव आदि का वर्णन किया गया है। नाटक

सिद्धि के लिए आवश्यकतत्वों का वर्णन किया गया है जो श्रोताओं तक नाट्य को जीवंत तौर पर महसूस कराया जा सके। इन 27 अध्यायों में नाटक विस्तृत तौर पर बताने के पश्चात अंतिम अध्याय में नाट्य में प्रयुक्त किए गए संगीत को वर्णित किया गया है क्योंकि संपूर्ण नाट्य संगीत के बिना अधूरा है। संगीत नाटक ही नहीं मनुष्य के जीवन का भी आधार है। यही संगीत मनुष्य रस के समान ही प्रत्येक चीज में महसूस करता है, खुश होता है तो कभी नाचता है, तो कभी आस–पास की वस्तुओं पर संगीत बजाता है संगीत मात्र संगीतज्ञों या विद्वानों तक ही सीमित नहीं है अर्थात संगीत की कोई निश्चित सीमा ही नहीं है। संगीत सभी में विद्यमान है। मानव किसी भी काम करते समय या कुछ सोचते हुए मेज पर तबला ड्रम बजाता है अर्थात कहने का तात्पर्य यह है, कि संगीत प्रत्येक स्थान पर है।

इसी प्रकार नाट्य के प्रत्येक भाव में संगीत है और उनमें ताल सर्वोपरि है। नाट्य में ताल द्वारा ही रस उत्पत्ति की जाती है, जिसे कभी छंद के अनुकूल तो, कभी पात्र की गति के अनुकूल प्रयोग किया जाता है क्योंकि ताल द्वारा भावों को प्रकट करना सर्वाधिक जीवंत होता है। यही वर्तमान में भी देखे तो आज ताल चलचित्र के किसी भी दृश्य को आकर्षित बनाता है। उसमें ताल को आधार माना जाता है, क्योंकि गीत भी अपनी ताल और लय के कारण ही प्रसिद्ध होते हैं। नाट्यशास्त्र में वाद्य अध्याय के अंतर्गत ताल वाद्य, प्रयोग वाद्य निर्माण के लक्षण, आदि वर्णन किया गया है। गायन के संदर्भ में ध्रुवा गान का वर्णन प्राप्त होता है, जिसके आधार पर वर्तमान गायन शैलियों का निर्माण हुआ है। इस प्रकार नाट्यशास्त्र एक जीवंत ग्रंथ है, जो लोक व्यवहार से लेकर संगीत के प्रत्येक विधा का दर्पण है।

(आकाशमान)

****